आर्य समाज का धार्मिक योगदान
(बिहार प्रांत के सन्दर्भ में)

डॉ0 धनंजय प्रसाद*
प्रो0 (डॉ0) केदार प्रसाद*

19वीं शताब्दी में धर्म पतन की चरम सीमा को प्राप्त कर अनेक प्रकार की कुप्रथाओं, अन्य परम्पराओं और माया–जाल में ग्रस्त हो रहा था। कुरीतियों को धर्म का स्वरूप दे दिया गया था। एकेश्वरवाद के स्थान पर अनेक कल्पित देवी देवताओं की पूजा हो रही थी। साधु समाज की दशा काफी सोचनीय हो गई थी। वह कई सम्प्रदायों में विभाजित तथा सभी तरह के दुर्व्यसनों में फँसे हुए थे। एकता, शाति, अहिंसा करूणा आदि का उपदेश करने के स्थान पर वह स्वयं एक दूसरे से घृणा व द्वेष करते थे तथा आपस में लड़ते झगड़ते थे। हिन्दू अनेक सम्प्रदायों में विभाजित थे जैसे वैष्णव के मुख्य पंथ थे–रामानुजी, रामान्नदी, कबीरपंथी, खाकी, मलूकपंथी, दादू पंथी, रामदासी, मीरावाई, माध्वाचारी, मखी मार्गी, चरणदामी साधना पंथी, माधवीनाग आदि। शव मत के विभिन्न पंथ दंडी, योगी, जगम, परमहंस, गुदरा, मुखरस, पड़ालिगी और सन्यासी अन्य गणपत गौरपत, नानक शाही, उदासी, रामरसी, सुथरेशाही, गोविन्द सिन्ही निर्मले और नागा। अनेक मत मतान्तर विचारों तथा क्रिया में बहुत भ्रष्ट होते हुए भी अपनी पवित्र पुस्तकों को भी मान्यता देते थे।

उससमय का समाज अंधविशवासी और रूढ़िवादी था। इनमें से एक मत शक्ति था जो अपनी देवी दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए नर बलि तक किया करते थे। एक बार उन्होंने दयानन्द को भी इस कार्य के लिए पकड़ लिया था और उनकी गर्दन पर तलवार का वार करने वाले ही थे कि वह दीवार से कूदकर बच निकले। हिन्दू मन्दिर पापाचार से अछूते नहीं हैं। जहाँ पर देव दासियों के नाम पर आजीवन ब्रह्मचारी रूप में कई वेश्यायें रखी जाती हैं। हिन्दुओं में सबसे ऊँच्ची जाति ब्राह्मण जाति थी जिसका आचरण फलोन्मुख था। ब्राह्मण जन्म से ब्राह्मण बन जाता था। उसकी शिक्षा या ज्ञान से उसके ब्राह्मण पद से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसका चयन या नियुक्ति नहीं होती थी, अपितु ब्राह्मण के घर में जन्म लेना ब्राह्मण बनने के लिए पर्याप्त था। ब्राह्मण को शस्त्रों का ज्ञाता मान लिया जाता था।

***व्याख्याता इतिहास विभाग लोक महाविद्यालय, हाफिजपुर, बनियापुर (सारण)**
***अध्यक्ष–राजनीतिशास्त्रा विभाग, जगदम महाविद्यालय, छपरा**

हिन्दुधर्म में बहुत ही कुरीतियाँ आ गई थी और तब तक ईसाई धर्म ब्रिटिश साम्राज्य की सहायता से दूर दूर तक फैल चूका था। लार्ड वैलेजली पहलागवर्नर जनरल था जिसने मराठी, तमिल, अरबी, चीनी व मलाई भाषा में बाइबिल का अनुवाद करावाया। फिर भी ईसाई धर्म अपने आरंभिक वर्षो में उन्नति न कर सका। ए0वी0 नामक पादरी ने लिखा–''आज जितने भी ईसाई 1815 में भारत में है वे 80 साल पहले के मुकाबले में एक तिहाई हैं। ये संख्या कम होता जा रहा है। फिर भी मिशनरी अपने प्रचार कार्य में लगे रहे। सौभाग्य से चार्टर एक्ट 1813 के लागू हो जाने से उनपर से प्रतिवन्ध हट गये और उनका काम और जोरों से सम्पूर्ण भारत के बड़े–बड़े शहरो में शुरू हो गया। हिन्दू धर्मावलम्बियों को अपने ही धर्म का सही ज्ञान न था। संस्कृत के विद्वान वेद विद्या को भूल चूके थे। 19 वीं सदी के आरंभकाल में भारतीय जनता की स्थिति दयनीय थी। अनेक प्रकार की कुरीतियाँ धर्म का अंग बन गई थी। इस समय ईसाई मिशनरियों का आन्दोलन काफी तीब्र गति से चल रहा था। शिक्षा के प्रचार के साथ साथ ईसाई धर्म जैसे–जैसे फैलने लगा उसीको को देखकर मैकाले में 12 अक्टूबर 1836 ई को अपने पिता को पत्रा लिखा था ''मेरा यह सुनिश्चित मत है कि यदि हमारी शिक्षा सम्बन्धी नीति कार्यान्वित की जाती रही तो तीस वर्ष के अन्दर बंगाल में सभ्रान्त परिवारों में एक भी मूर्ति पूजक शेष नहीं रह जायेगा''[1]।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के धर्म सम्बन्धी विचार बुद्धि की कसौटी पर खरे उतरते है। स्वामी जी के अनुसार जो कुछ सत्य है वही धर्म है। ''जो पदार्थ जैसा है वैसा ही लिखना कहना और मानना सत्य कहलाता है[2] ''स्वामी जी के कथनानुसार ''जो पक्षपात रहित न्यायचरण, सत्य भाषा आदि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरूद्ध है उसको धर्म और जो पक्षपात सहित अन्याचरण, मिथ्याभाषणादि, ईश्वराज्ञा भंग बेद विरूद्ध है उसको अधर्म मानता हूँ[3]। चारो वेदों का निभान्त स्वतः प्रमाण मानता हूँ। वे स्वयं प्रमाण स्वरूप हैं कि जिनका प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं जैसे पूर्व प्रदीप अपने सूर्य से स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रशासक होते हैं वैसे चारों वेद है''[4]। सत्य को जानने के लिए स्वामी दयानन्द के अनुसार वेद ही प्रमाण हैं। जो कुछ वेद के अनुसार है वह सत्य है जो वेद विरूद्ध है वह असत्य है[5]।

सत्यासत्य निर्णय के सम्बन्ध में स्वामी जी लिखते हैं–''परीक्षा पाँच प्रकार की है। इसमें से प्रथम जो ईश्वर उसके गुण धर्म स्वभाव और वेदविद्या दूसरी प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, तीसरी सृष्टि क्रम चौथी आप्तों का व्यवहार और पाँचवे अपने आत्मा की पवित्राता, इन पाँच परीक्षाओं से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना चाहिए[6]। स्वामी जी के अनुसार धर्म अनेक नहीं हो सकते ''चूँकि ईश्वर एक है अतः धर्म भी एक है और ये वेद धर्म हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आजीवन मूर्ति पूजा का विरोध किया। कट्टर पौराणिक ब्राह्मण कुल में पैदा होकर भी स्वामीदयानन्द मुर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। उनके मतानुसार जो लोग भूमि, पेड़, मनुष्यों की पूजा ईश्वर के स्थान पर करते हैं वो दुख के सागर में डुबेंगे[7]। स्वामी जी ने अपने ग्रंथों में मूर्ति पूजा का विरोध काफी किया और ईश्वर प्राप्ति के लिए उसे केवल अनावश्यक ही नही अपितु बाधक समझा। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होने मूर्ति पूजा के सोलह दोष बताये हैं[8]। स्वामी जी मूर्ति पूजा को देश के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा आर्थिक पतन का कारण मानते थे। उनका विचार था कि लोगों में अनेक प्रकार की मूर्तियों की पूजा के कारण एकता नहीं रहेगी। स्वामी जी के अनुसार'' वे मूर्ति पूजक अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं और गुलाम बन जाते हैं और अनेक कष्ट भोगते हैं''[9]। मूर्ति पूजा ने लोगों का विभाजन किया सभी मूर्तियाँ काल्पनिक हैं और किन्हीं दो व्यक्तियों की कल्पना एक सी नहीं हो सकती इसलिए आपसी ईर्ष्या द्वेश व प्रतिदन्दिंता पैदा हो गई है। स्वामी जी मूर्ति पूजा को ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ी मानने को तैयार नहीं थे। उन्होने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है–मूर्ति पूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर चकनाचुर हो जाता है। पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है[10]।

वर्तमान समय में आर्य समाज की कई इकाईयों द्वारा सामाजिक बुराईयों के प्रति ध्यान दिया जा रहा है। इन ईकाईयों में बिहार प्रान्त के छपरा, सीवान, पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर तथा रक्सौल जैसे इकाई का स्थान उल्लेखनीय है। इन इकाईयों द्वारा धार्मिक संस्कारों के प्रति लोगों को जागरूक बनाने तथा धार्मिक आडम्बरों से दूर करने के लिए बहुत ही प्रयास किये जाते है। इन प्रयासों में दानापुर आर्य समाज केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान है। समय–समय पर इन केन्द्रों द्वारा धार्मिक सभाओं तथा हवन सम्बन्धी कार्यो द्वारा व्यक्तियों के विचारों से भ्रमों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रयास के कड़ी में स्वामी अमेदानन्द का सम्पूर्ण बिहार प्रान्त में, मालवीय दाढ़ी बाबा का सीवान जिला में साधु ब्रवनन्दन का, पटना जिला के मीठापुर में, स्व0 पं0 अयोध्या प्रसाद का लोहदगा, स्व0 कार्तिक प्रसाद देव मुंगेर जिला, पदमभूषण डॉ0 दुखन राम का मुजफ्फरपुर जिला पं0 वासुदेव शर्मा का वैद्यानाथ धाम, आचार्य पं0 रामानन्द शास्त्राी गोपालगंज जिला, स्व0 दुर्गा राम काश्यप हजारीबाग स्व0 मदन गोपाल, राँची श्री इन्द्रदेव नारायण अधिवक्ता आरा भोजपुर श्री गौरीशंकर प्रसाद तथा अखिलेश शरण पटना जिला के बाँकीपुर श्री विद्याभूषण मुजफ्फरपुर कविराज श्री दुर्गा प्रसाद शास्त्राी तथा स्व0 बद्रीनारायण शर्मा मुंगेर, प्रो0 श्यामनन्दन शास्त्राी, श्री गंगा प्रसाद श्री बद्री प्रसाद मोतिहारी श्री गुलाब चन्द आर्य, श्री मुंशी प्रसाद, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

गुप्त[11] जैसे समाजसेवको का पूरा परिवार आर्य समाज के माध्यम से धार्मिक आडम्बरों को दूर करने का निस्वार्थभाव से सेवा करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को निरूतर अग्रसर कर रहे है।

टिप्पणीयाँ–

1. भारत के सामाजिक एवम धार्मिक जीवन में आर्यसमाज का योगदान– डॉ0 मधुचोपड़ा पृष्ट– 39
2. सत्यार्थ प्रकाश– दयानन्द सरस्वती
3. तथैव– पृष्ट सं0– 812
4. तथैव– पृष्ट सं0– 135
5. तर्थव– पृष्ट सं0– 135
6. स्मंत व्यामंत्व्य प्रकाश– दयानन्द सरस्वती पृष्ट– 39
7. उपदेश मंजरी– दयानन्द सरस्वती पेज– 9
8. तथैव– पृष्ट – 32
9. तथैव– पृष्ट– 33–36
10. तथैव– पृष्ट – 37
11. बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास– स्वामी अभेदानन्द सरस्वती